Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Publisher: Indian Mental Health & Research Centre
ISSN: 2582-2004
Volume 03, Issue 02
DOI: 10.46523/jarssc.03.02.23
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.612

लखीमपुर खीरी जनपद (उ०प्र०) का पीतल कुटीर उद्योग -क्षेत्रीय सर्वेक्षण

डा० नूतन सिंह

एसोशिएट प्रोफ़ेसर, इतिहास

युवराज दत्त महाविद्यालय लखीमपुर खीरी

शोध सारांश

मानव इतिहास में प्राचीन काल से पीतल के बर्तनों का उपयोग सामान्यतः होता आया है| आधुनिक युग में स्टील के बर्तनों की सहजता ने पीतल को रोजमर्रा के उपयोग से बाहर कर दिया है| पीतल के बर्तन पूजा-पाठ,शादी-विवाह या सजावटी वस्तुओं तक सिमट कर रह गए हैं | इसके बावजूद अधिकांश मध्यमवर्गीय एवं उच्चवर्गीय हिन्दू परिवार में पीतल के बर्तन कोई न कोई अब भी अवश्य होते हैं|

लखीमपुर-खीरी, उत्तर प्रदेश के जनपदों में महत्वपूर्ण स्थान रखता है| महत्त्वपूर्ण होने का कारण जनपद की भौगोलिक स्थिति व इसका भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम तथा राष्ट्रीय आन्दोलन में योगदान है| यह जनपद उत्तर में नेपाल से सटे होने के कारण राजनीतिक तथा आर्थिक दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण स्थिति रखता है| दोनों ही देशों के स्थानीय राजनीतिज्ञ, विद्यार्थी, व्यापारी सामाजिक और असामाजिक तत्व, सभी भारत-नेपाल संबंधों को प्रभावित करते हैं| अतीत में इस जनपद में 'खैर' का अत्यधिक जंगल विद्यमान था और अब भी बहुत कुछ है, इसी से यह जनपद 'खीरी' के नाम से लोकप्रिय हुआ| 'मोहान नदी' 1899 ई० में नेपाल ब्रिटिश भारत की सीमा स्वीकार की गयी थी| 7680 वर्ग किमी० क्षेत्र में विस्तृत इस जनपद की भारत नेपाल संबंधों में सदैव महत्वपूर्ण भूमिका रही है| 27.6 to 28.6 (North)अक्षांश एवं 80.34 to 81.30 (East) देशांतर पर स्थित है| जनपद की सीमायें उत्तर में नेपाल ,पश्चिम में ,शाहजहांपुर जनपद,दक्षिण में हरदोई व् सीतापुर जनपद तथा पूर्व में बहराइच जनपदों को स्पर्श करती हैं| इसी के अंतर्गत जिला पंचायत ओयल स्थित है |

मानव इतिहास में प्राचीन काल से पीतल के बर्तनों का उपयोग सामान्यतः होता आया है| आधुनिक युग में स्टील के बर्तनों की सहजता ने पीतल को रोजमर्रा के उपयोग से बाहर कर दिया है| पीतल के बर्तन पूजा-पाठ,शादी-विवाह या सजावटी वस्तुओं तक सिमट कर रह गए हैं | इसके बावजूद अधिकांश मध्यमवर्गीय एवं उच्चवर्गीय हिन्दू परिवार में पीतल के बर्तन कोई न कोई अब भी अवश्य होते हैं| यद्यपि सरकारी अभिलेखों में पीतल के बर्तनों के लिए बनारस मिर्जापुर,फर्रुखाबाद, हाथरस,मुरादाबाद, मिर्जापुर, रामपुर के नाम उल्लिखित हैं किन्तु घरेलू उपयोग के कुछ बर्तनों का निर्माण लखीमपुर खीरी जनपद के 'ओयल' कस्बे में कई दशकों से होता आ रहा है| इस कस्बे के लगभग तीस घरों में यह लघु उद्योग है| इतिहास का विद्यार्थी होने के कारण इस लघु उद्योग एवं इससे जुड़े कारीगरों,व्यवसाइयों एवं निर्माताओं का सामाजिक अध्ययन करना ही इस शोध का उद्देश्य है|

Received: 04.09.2020 **Accepted:** 25.09.2020 **Published**: 26.09.2020

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Publisher: Indian Mental Health & Research Centre
ISSN: 2582-2004
Volume 03, Issue 02
DOI: 10.46523/jarssc.03.02.23
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.612

उत्तर प्रदेश के अन्य क्षेत्रों में पीतल एवं कांसा धातु के बर्तनों की निर्माण एवं व्यवसाय की प्रक्रिया जानने के उद्देश्य से हमने कई पुस्तकों का अध्ययन किया जिसमें प्रमुख हैं -नीता कुमार की आर्टीजन ऑफ़ बनारस , परमथनाथ बोस की ए हिस्ट्री आफ हिन्दू सिविलाइजेशन ड्यूरिंग ब्रिटिश रूल, पुस्तकों का अध्ययन किया| इन पुस्तकों में अन्य नगरों के पीतल उद्योग की स्थिति पर प्रकाश पड़ता है| लखीमपुर खीरी जनपद के पीतल उद्योग पर लिखित सामग्री उपलब्ध नहीं है| अत: जानकारी हेतु उपलब्ध साहित्य संकलन की दिशा में किये गए प्रयास के पश्चात हमें जो सामग्री मिली वह दैनिक समाचार-पत्रों की कतरनों, शिल्पियों व निर्माताओं से लिए गए साक्षात्कार हैं |

प्रस्तुत शोध में यह जानने का प्रयास किया गया है कि पीतल उद्योग से जुड़े समुदाय के आधारभूत जीवन में क्या बदलाव हो रहे हैं, क्योकि बर्तन निर्माण से जुड़े परिवारों के बच्चे अब अध्ययन से जुड़ रहे हैं| संभव है, बेहतर भविष्य के लिए वे इस व्यवसाय से हट जांय| शोध-पत्र में यह जानने का प्रयास किया गया है कि पीतल उद्योग से जुड़े लोग किस प्रकार न केवल अपना जीवन यापन करते हैं अपितु अन्य वर्ग के लिए भी रोजगार का सृजन करते हैं| अर्थव्यवस्था के परिचालन में भी इस उद्योग की भूमिका कितनी महत्वपूर्ण है|

मुख्य शब्द – ओयल,घरिया, पीतल ,शिल्पकार

प्रस्तावना – उत्तर प्रदेश के अन्य क्षेत्रों में पीतल एवं कांसा धातु के बर्तनों की निर्माण एवं व्यवसाय की प्रक्रिया जानने के उद्देश्य से हमने कई पुस्तकों का अध्ययन किया जिसमें प्रमुख हैं -नीता कुमार की आर्टीजन ऑफ़ बनारस , परमथनाथ बोस की ए हिस्ट्री आफ हिन्दू सिविलाइजेशन ड्यूरिंग ब्रिटिश रूल, पुस्तकों का अध्ययन किया| इन पुस्तकों में अन्य नगरों के पीतल उद्योग की स्थिति पर प्रकाश पड़ता है| लखीमपुर खीरी जनपद के पीतल उद्योग पर लिखित सामग्री उपलब्ध नहीं है| अत: जानकारी हेतु उपलब्ध साहित्य संकलन की दिशा में किये गए प्रयास के पश्चात हमें जो सामग्री मिली वह दैनिक समाचार-पत्रों की कतरनों, शिल्पियों व निर्माताओं से लिए गए साक्षात्कार हैं |

इस पीतल उद्योग के बारे में विस्तार से जानने हेतु हमने लखीमपुर खीरी जनपद के ओयल कस्बे के बगिया मोहल्ले का सर्वेक्षण किया|इस व्यवसाय से जुड़े लोगों से बातचीत किया| बर्तनों के निर्माण की प्रक्रिया को देखा|हमने देखा कि पीतल के बर्तनों के निर्माण के कारोबार से किसी एक जाति विशेष के लोग नहीं जुड़े हैं, अपितु कसेरा, ठठेरा, जायसवाल तथा अन्य जातियों के लोग भी जुड़े हैं| कुछ परिवार बर्तन के निर्माण के साथ-साथ बर्तनों के विक्रय का कार्य भी स्वयं संभालते हैं, जबकि कुछ परिवार सिर्फ बर्तनों के निर्माण मात्र से ही जुड़े हैं| समय के साथ स्टेनलेस स्टील के बर्तनों ने पीतल के बर्तनों की जगह पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया है| इस कारण अब पीतल के बने भारी बर्तन शादी विवाह पूजा-पाठ तक सिमट कर रह गए हैं| त्योहारों या सहालग में ही पीतल के बर्तनों की मांग बढ़ती है | उस दृष्टि से यह सीजनल व्यवसाय है| फायदेमंद

Received: 04.09.2020 **Accepted:** 25.09.2020 **Published**: 26.09.2020

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Publisher: Indian Mental Health & Research Centre
ISSN: 2582-2004
Volume 03, Issue 02
DOI: 10.46523/jarssc.03.02.23
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.612

व्यवसाय न होने एवं बहुत ही उजला भविष्य न दिखने के बावजूद पीतल उद्योग से जुड़े समुदाय के इस धंधे से जुड़ने के परिप्रेक्ष्य में मुख्य कारण दो ही परिलक्षित होते हैं- पहला जमा जमाया पुश्तैनी व्यवसाय, दूसरे-अन्य व्यवसाय की अनुपलब्धता|

प्रस्तुत शोध में यह जानने का प्रयास किया गया है कि पीतल उद्योग से जुड़े समुदाय के आधारभूत जीवन में क्या बदलाव हो रहे हैं, क्योकि बर्तन निर्माण से जुड़े परिवारों के बच्चे अब अध्ययन से जुड़ रहे हैं| संभव है, बेहतर भविष्य के लिए वे इस व्यवसाय से हट जांय| शोध-पत्र में यह जानने का प्रयास किया गया है कि पीतल उद्योग से जुड़े लोग किस प्रकार न केवल अपना जीवन यापन करते हैं अपितु अन्य वर्ग के लिए भी रोजगार का सृजन करते हैं| अर्थव्यवस्था के परिचालन में भी इस उद्योग की भूमिका कितनी महत्वपूर्ण है|

भारत विश्व का सबसे बड़ा पीतल के बरतन बनाने वाला देश है|भारत एवं उत्तर प्रदेश के अनेक शहरों में उत्तम कोटि के बर्तन बनते थे | जिनकी ख्याति दूर–दूर तक फैली है| लखीमपुर जनपद मुख्यालय से 13 किमी0 दक्षिण, सीतापुर रोड पर बसा है ओयल कस्बा | जिसे लगभग 350 वर्ष पूर्व ओयल स्टेट के राजा बख्त सिंह ने बसाया था| बाद में कैम्हारा स्टेट के ओयल में मिल जाने से यह 'ओयल-कैम्हारा स्टेट' कहलाने लगा |ओयल में राजा की गढ़ी सहित, दर्शनीय स्थल 'मेढक मंदिर' तथा अन्य प्राचीन विरासत के प्रतीक आज भी विद्यमान हैं|

भारत में घरेलू पीतल के बर्तनों का उपयोग सामान्यत: प्राचीन मध्य व आधुनिक काल में होता था| यहाँ के परंपरागत हस्तशिल्प में कांसा व पीतल के बर्तन-कारीगरों का महत्वपूर्ण योगदान रहता था| चूँकि सामान्य हिन्दू घरों में बर्तनों की शुद्धता की मानसिकता के कारण प्रत्येक इस्तेमाल के बाद मिटटी, राख या बालू से बर्तनों को साफ़ करने की प्रथा थी, अतएव ऐसे बर्तन सजावटी या नक्काशी वाले नहीं बनाए जाते थे| सजावट के नाम पर अधिक से अधिक लकीरें या बिंदु बना दिए जाते थे| अधिकतर ढलाई द्वारा या ठोंक पीट कर ये बर्तन बनाए जाते थे | इसलिए इनकी बिक्री भी वजन के आधार पर होती थी| ये बर्तन पूजा, खाना बनाने, भोजन करने,पानी पीने जैसे कार्यों में उपयोग किये जाते थे| किसी जमाने में समृद्धि की ऊँचाइयों को छूता पारंपरिक धातु के बर्तन का यह पारंपरिक व्यवसाय 20 वीं सदी के पश्चात निश्चित रूप से पतनोन्मुख हो चुका है| उसके पूर्व बर्तन व्यवसाय पर पीतल के बर्तनों का आधिपत्य था| अधिकतर कस्बों में ठठेरे या कसेरे बर्तन बनाते थे| पीतल के बर्तन हिंदू रसोई की शोभा होते थे| यह एक ऐसा देशी शिल्प है जिसकी प्रतिद्वंदिता विदेशों में नहीं है|

पीतल एक प्रमुख मिश्रित धातु है| यह तांबा एवं जिंक धातुओं के मिश्रण से बनाया जाता है| संस्कृत में पीत का अर्थ होता है- पीला | यह इसके पीलापन लिए सफ़ेद रंग को दर्शाता है| पीतल में 36% तक जस्ता रहता है| इसकी दो किस्मों में से एक में 70% तक तांबा 30% जस्ता(जिंक) रहता है जबकि दूसरी किस्म में 60% तांबा 40% जस्ता रहता है| तांबे की अपेक्षा पीतल अधिक मजबूत होता है| इस पर कलई भी अच्छी चढ़ती है| जिस पीतल में तांबा 60-62, जस्ता 40-38, सीसा 2-3 के अनुपात में रहता है उस पर खराद अच्छी होती है |

Received: 04.09.2020 **Accepted:** 25.09.2020 **Published**: 26.09.2020

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Publisher: Indian Mental Health & Research Centre
ISSN: 2582-2004
Volume 03, Issue 02
DOI: 10.46523/jarssc.03.02.23
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.612
Crossref DOI Prefix 10.46523

शिल्पकार ऐसा बताते हैं कि ओयल के पीतल (जिसे यहाँ के कारीगर 'माल'के बर्तन कहते हैं) के बर्तनों की गुणवत्ता उच्च कोटि की है| और पीतल के बर्तनों के निर्माण की प्रक्रिया भी कई पीढ़ियों से चल रही है| यद्यपि निर्माण के पुराने तरीके में समय के साथ कुछ बदलाव हुए हैं| यहाँ के बने बर्तन विक्रय हेतु बहराइच, बाराबंकी, महमूदाबाद, शाहजहांपुर, हरदोई, पीलीभीत, खटीमा, बरेली, रामपुर, किच्छा, रायबरेली, रुद्रपुर तक जाते थे|

प्राचीन पद्धति के अनुसार बर्तनों के निर्माण में अधिक श्रम ,अधिक श्रमिक एवं अधिक समय लगता था| पहले पीतल को पिघलाने के लिए एक बहुत बड़ी भट्ठी को बनाया जाता था, जिसमे ईंधन की खपत अधिक होती थी | भट्ठी की आंच तेज करने के लिए हाथ के पंखे (धौंकनी) से हवा की जाती थी| पीतल पिघलाने के लिए जिस बर्तन का प्रयोग किया जाता था उसे 'घरिया' कहा जाता है| पहले घरिया कुम्हार को ऑर्डर करके देशी मिट्टी से बनवाई जाती थी | प्राचीन तरीके में जितने बर्तन बनाए जाते थे, उतनी घरिया की खपत होती थी | घरिया बनाने से कुम्हारों को निरन्तर रोजगार मिलता था एवं उससे उनका जीवन-यापन सुगमता से हो जाता था| समय के साथ यहां के बने घरिया की मांग बंद हो गयी और कुम्हारों का यह काम बंद हो गया| इस प्रकार पीतल शिल्प से जुड़ा यह आनुषांगिक रोजगार बंद हो गया|

घरिया

यहाँ निर्मित होने वाले बर्तनों में मुख्य हैं– 'बटुआ' या 'बटुला', 'लोटा', 'करवा','कटोरा', 'चमचा' या 'कलछी'| इन अलग अलग बर्तनों को अलग अलग शिल्पकार बनाते थे|बर्तनों के निर्माण में लगने वाले शिल्पियों का विवरण इस प्रकार है- प्राचीन पद्धति में माल पिघलाने वाला, सांचा बनाने वाला (ढलाई करने वाला),रेत के द्वारा माल की रेताई करने वाला,पीतल की हिलाई करने वाले, इन सभी के एक-एक सहायक, तैयार माल की ढुलाई करने वाले व्यक्ति इस रोजगार में लगे होते थे |प्रत्येक कारखाने में कम से कम दस से पंद्रह श्रमिक लगे होते हैं|

Received: 04.09.2020 **Accepted:** 25.09.2020 **Published**: 26.09.2020

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Publisher: Indian Mental Health & Research Centre
ISSN: 2582-2004
Volume 03, Issue 02
DOI: 10.46523/jarssc.03.02.23
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.612
Crossref DOI Prefix 10.46523

समय के साथ शिल्पकारों ने नई पद्धति अपना ली है| नई पद्धति में बर्तनों के निर्माण प्रक्रिया में सुधार हुआ है| पहले की अपेक्षा भट्ठी का आकार थोड़ा छोटा हो गया है| अब पीतल पिघलाने के लिए बनी बनाई घरिया बाहर से आने लगी है|यह घरिया पहले की मिटटी की घरिया की अपेक्षा मजबूत होती है| एक ही घरिया में कई बार धातु पिघलाने का कार्य होता रहता है| अब धातु पिघलाने में पहले की अपेक्षा ईंधन भी कम लगता है क्योंकि बार-बार एक ही घरिया उपयोग में लेने से कम तापमान में बर्तन तैयार हो जाते हैं | छोटी भट्ठी का तापमान लगभग 1400^0 सेल्सियस होता है, जिसमें पीतल को पिघला लिया जाता है तथा सांचे में भरकर उसे मनचाहा आकार दिया जाता है|आधुनिक समय में भट्ठी की आंच तेज करने के लिए बिजली के पंखे से हवा की जाती है| ढलकर तैयार बर्तनों को सुन्दर रूप प्रदान करने के लिए उनकी घिसाई और पालिश का कार्य भी कारखाने में होता है| इन सभी कार्यों के लिए समय के साथ आधुनिक मशीनों का इस्तेमाल बढ़ गया है|

ढलाई –सर्वप्रथम कच्चे माल धातु या पुराने बर्तनों को तोड़कर छोटे-छोटे टुकड़े कर दिया जाता है तत्पश्चात इसे घरिया में भरकर भट्ठी के अन्दर रख देते हैं | भट्ठी की आंच खूब तेज धधकाने के लिए 15-20 मिनट इलेक्ट्रिक पंखे से तेज हवा करते हैं| कुछ देर में पीतल पिघलकर एक द्रव का रूप ले लेता है| अब पिघली हुई धातु को रेत से बने सांचे में फर्मे द्वारा बर्तन का आकार देकर तैयार कर लिया जाता है|

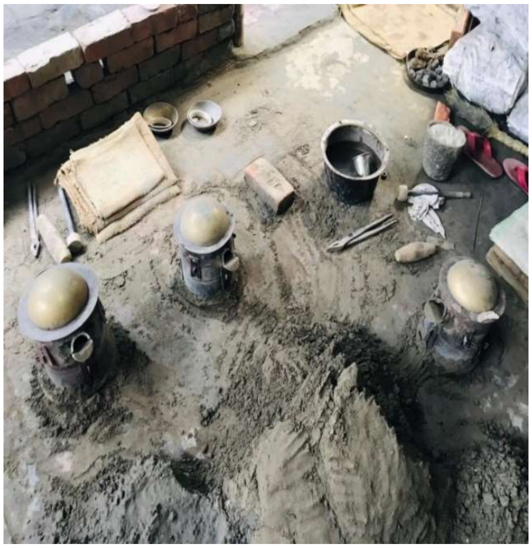

भट्ठी

भट्ठी

Received: 04.09.2020 **Accepted:** 25.09.2020 **Published**: 26.09.2020

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Publisher: Indian Mental Health & Research Centre
ISSN: 2582-2004
Volume 03, Issue 02
DOI: 10.46523/jarssc.03.02.23
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.612

रेत, मिटटी

पिघला हुआ पीतल

फ्रेम

फ्रेम

सबसे पहले तैयार बर्तन की ग्राइन्डर मशीन द्वारा रेताई की जाती है इसमें बर्तन को अच्छी तरह घिसकर पत्थर पर साफ़ कर लिया जाता है|इससे बर्तन की उपरी परत चमकदार और चिकनी हो जाती है|अब इसे दूसरी मशीन द्वारा छिलाई की जाती है |अलग अलग यंत्रों (टूल्स) की मदद से इन्हें पूर्णतया साफ़ और चिकना बनाया जाता है|अंत में बर्तनों पर चमक लाने के लिए पालिश किया जाता है|पालिश के बाद ये बर्तन बिकने के लिए तैयार हो जाते हैं तथा शिल्पकार इसे बर्तन व्यवसाइयों को बेच देते हैं|

Received: 04.09.2020 **Accepted:** 25.09.2020 **Published**: 26.09.2020

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Publisher: Indian Mental Health & Research Centre
ISSN: 2582-2004
Volume 03, Issue 02
DOI: 10.46523/jarssc.03.02.23
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.612

पक कर तैयार बर्तन

पालिश किये बटुआ या बटुला

चिमचा या बड़ी कलछी

करवा

ओयल कस्बे में इस व्यवसाय से करीब तीस कसेरों, ठठेरों, जायसवाल जाति के परिवार अब भी जुड़े हैं| यह इनका पुश्तैनी धंधा है| वर्तमान में पीतल उद्योग से जुड़े निर्माताओं का कहना है कि इस उद्योग की दशा बहुत अच्छी नहीं है|अब पीतल के बर्तन मात्र शादी विवाह में ही प्रयुक्त होते हैं| दैनिक प्रयोग में पीतल के बर्तनों का उपयोग कम हो गया है|जिसके कारण पीतल के बर्तनों की मांग दिन-प्रतिदिन कम होती जा रही है| ऐसी स्थिति में व्यवसाय कम होता जा रहा है| व्यवसाय के लिए अक्सर व्यवसायी छोटे छोटे कारीगरों का शोषण करते हैं| उन्हें उनका उचित पारिश्रमिक नहीं मिलता |मजदूर अपनी उच्चतम मजदूरी की जिद कर बैठता है और महाजन अपनी चाल चलता है| निर्माण की परेशानियों के साथ-साथ बर्तनों के आयात-निर्यात में भी अनेक कठिनाइयाँ आती हैं | बड़ी रेलवे लाइन बनने से यहाँ ट्रेन रुकती नहीं|इसलिए परिवहन के लिए अन्य साधनों का सहारा लेना पड़ता है|

पीतल निर्माण से जुड़े ओयल के व्यवसायी इस धंधे से संतुष्ट नहीं हैं| मांग और आपूर्ति का अनुपात बिगड़ते ही महाजन मौके का फायदा उठाते हुए बहुत ही कम दाम में माल खरीदते हैं | जिनकी फ़र्म पंजीकृत है उन्हें टैक्स देना पड़ता है और उत्पाद मंहगे हो जाते हैं जबकि अपंजीकृत निर्माता सस्ते दरों पर उत्पाद बेचकर बेहतर मुनाफा कमाते हैं | पंजीकृत

Received: 04.09.2020 **Accepted:** 25.09.2020 **Published**: 26.09.2020

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Publisher: Indian Mental Health & Research Centre
ISSN: 2582-2004
Volume 03, Issue 02
DOI: 10.46523/jarssc.03.02.23
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.612
Crossref DOI Prefix 10.46523

निर्माताओं का काफी पैसा टैक्स में चला जाता है|शिल्पी सरकारी विभागों में व्याप्त भ्रष्टाचार का भी शिकार होते हैं| सरकार द्वारा कच्चे माल पर 12% तथा पक्के माल पर 18% जी एस टी निर्धारित की गयी है|पीतल की अपेक्षा सोने चांदी जैसी मूल्यवान वस्तुओं पर जी एस टी की दरें कम हैं |कड़ी मेहनत के बावजूद कच्चे माल की बढ़ती कीमतों एवं अन्य समस्याओं के कारण यह उद्योग तेजी से अपने ढलान पर है| इसका बाजार सिमटता जा रहा है|

वर्तमान समय में पीतल बर्तन निर्माताओं को होने वाली समस्याओं को कम करने के उपाय

साक्षात्कार में निर्माताओं ने बताया कि -

- वर्तमान समय में बाजार में होने वाली स्पर्धा को कम करने के लिए उत्पादों की निश्चित न्यूनतम दरें निर्धारित होनी चाहिए तथा यह भी तय हो कि सभी शिल्पी एक ही निर्धारित दर पर व्यापारियों को माल बेचें| आयात-निर्यात एवं माल के परिवहन हेतु उचित व्यवस्था सरकार द्वारा होनी चाहिए , जिससे कच्चा माल बाहर से सीधे कारखाने तक पहुच सके |
- टैक्स की दरें कम होनी चाहिए ताकि निर्माता टैक्स आसानी से भर सकें | टैक्स कम होने से उत्पाद की कीमत कम होगी, जिससे बिक्री बढ़ेगी |
- सरकारी स्तर पर लखीमपुर खीरी में एक प्रक्षिक्षण संस्थान खोला जाय और निर्माण की प्रक्रिया में आधुनिक यंत्रों तथा तकनीकी का प्रयोग कर कम लागत,कम समय में अधिक उत्पादन हो सके|
- बैंकों से आसानी से ऋण मिल सके ताकि शिल्पकार महाजनों के शोषण से बच सकें |
- एक ख़ास बात यह सब बताते हुए अधिकांश बर्तन निर्माता अपना नाम सार्वजनिक नहीं करना चाहते हैं |

निष्कर्ष- हस्तशिल्प के अध्ययन से कुछ बातें स्पष्ट होती हैं| इन कलाओं से जुड़े ये हस्तशिल्पी बहुत अच्छी आर्थिक स्थिति में नहीं हैं | ये सभी अपने जीवन यापन हेतु हस्तकलाओं के अतिरिक्त कोई न कोई अन्य कार्य अवश्य करते हैं | सरकारी सहायता के परिणाम अभी धरातल पर नहीं दिख रहे हैं | पीतल बर्तन के शिल्पकारों के उत्थान के लिए जनपद में कोई सरकारी योजना नहीं परिलक्षित हो रही है|अध्ययन के बाद यह स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है कि आवश्यकता है समुचित प्रशिक्षण एवं समुचित टूलकिट उपलब्ध कराये जांय | पीतल के शिल्पकारों को नवीन वस्तुओं के निर्माण हेतु प्रशिक्षण एवं उपकरण प्रदान किये जाय | उनकी ब्रांडिंग एवं ई मार्केट उपलब्ध कराने पर बल दिया जाय | आवश्यकता है कि इस समुदाय के सक्रिय व्यक्तियों से नीति-निर्माण एवं उसके कार्यान्वयन में सलाह ली जाय| शिल्प व शिल्पकारों से जुड़ी भविष्य की परियोजनाओं में इस समूह के लोगों को सम्मिलित किया जाय|

सन्दर्भ सूची-

Received: 04.09.2020 **Accepted:** 25.09.2020 **Published**: 26.09.2020

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Publisher: Indian Mental Health & Research Centre
ISSN: 2582-2004
Volume 03, Issue 02
DOI: 10.46523/jarssc.03.02.23
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.612
Crossref DOI Prefix 10.46523

1. बोस,परमथनाथ, ए हिस्ट्री आफ हिन्दू सिविलाइजेशन ड्यूरिंग ब्रिटिश रूल,पेज-254-257,वॉल्यूम-2,न्यू मैन एंड कंपनी,कलकत्ता ,1894.
2. नीता कुमार,द आर्टीजन ऑफ़ बनारस ,पापुलर कल्चर एंड आइडेंटिटी,पेज-25-33,1880-1986,नई दिल्ली,1988.
3. मुखर्जी, विश्वनाथ, बना रहे बनारस,1958.
4. मुखर्जी ,टी एन,आर्ट मैन्युफैक्चरर ऑफ़ इंडिया,नई दिल्ली,नवरंग,1974.
5. मुखर्जी ,मीरा,मेटल क्राफ्ट्समेन ऑफ़ इंडिया,कलकत्ता,एन्थ्रोपोलाजिकल सर्वे ऑफ़ इंडिया,गवर्नमेंट ऑफ़ इंडिया,1978.
6. दीक्षित, सूर्यप्रसाद, अवध संस्कृति विश्वकोश ,वाणी प्रकाशन,2016 .
7. सिंह ,नूतन, इतिहास के पन्नों में दर्ज लखीमपुर खीरी का विलोबी मेमोरियल भवन,शोध-पत्र,जर्नल ऑफ़ एडवांस रिसर्च इन साइंस एंड सोशल साइंस.वॉल्यूम -02.इशू-02,पेज -205-211
8. बर्तन निर्माताओं से साक्षात्कार.

Received: 04.09.2020 **Accepted:** 25.09.2020 **Published**: 26.09.2020

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.